Patrika (Indore), 12th November 2026, Front Page – 02

इंदौर प्राइम INDOREPRIME
पत्रिका patrika.com
इंदौर, गुरुवार, 12 नवंबर, 2026

क्यूएस वर्ल्ड रैंकिंग-2027 : रिसर्च, फंडिंग, पेटेंट, कोलेब्रेशन नहीं होना रहा पिछड़ने का कारण

इंटरनेशनल रैंकिंग से प्रदेश के संस्थान दूर केवल आइआइटी को स्थान, 546वां नंबर

पत्रिका डेटा डीकोडेड

पत्रिका रफी मोहम्मद शेख
patrika.com



इंदौर. क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग में इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी इंदौर (आइआइटी) ने अपना स्थान बनाते हुए मध्यप्रदेश के एकमात्र संस्थान होने का गौरव प्राप्त किया है। आइआइटी इंदौर ने न केवल क्यूएस रैंकिंग, बल्कि नेशनल (एनएफआइआर) में भी उपस्थिति दर्ज कराई है। प्रदेश की पारंपरिक यूनिवर्सिटीज और अन्य शिक्षण संस्थानों की स्थिति चिंताजनक है।

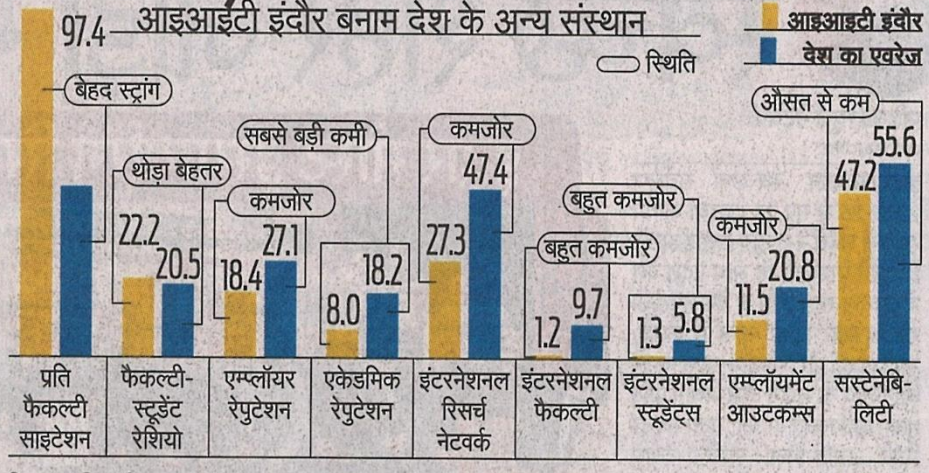
क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2027 में भारत के 52 संस्थान शामिल हुए। आइआइटी दिल्ली देश का टॉप संस्थान बनकर 118वीं तो आइआइटी इंदौर 546वीं रैंक पर है। आइआइटी बॉम्बे 134वें, आइआइटी मद्रास 170वें और आइआइटी खड़गपुर 205वें स्थान पर है। आइआइएससी बेंगलूरु और आइआइटी कानपुर दोनों 221वीं रैंक पर हैं। आइआइटी इंदौर पिछली रैंकिंग के 556 से 10 पोजीशन आगे आकर 546वीं रैंक पर पहुंचा है।

आइआइटी इंदौर के प्लस पाइंट्स

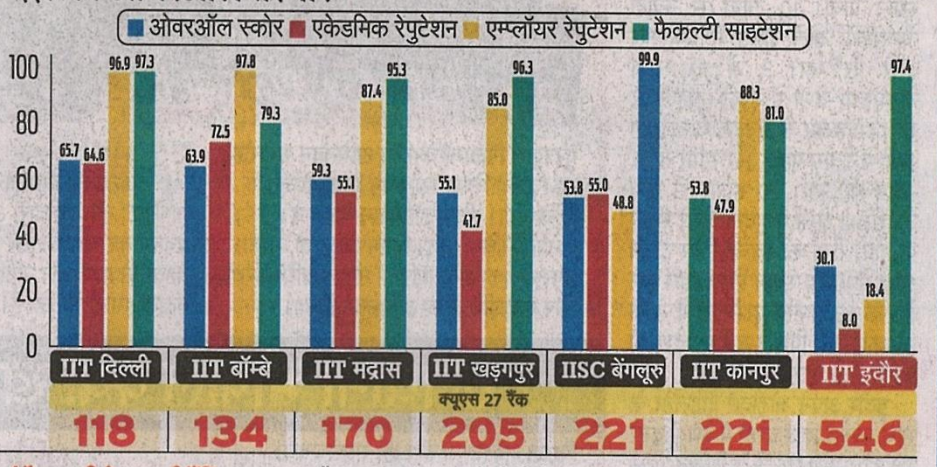
एनआइआरएफ में आगे: एनआइआरएफ के मूल्यांकन में आइआइटी इंदौर ने इंजीनियरिंग कैटेगरी में देश के टॉप संस्थानों में अपनी स्थिति मजबूत की है। यह देश के टॉप-15 से टॉप-20 इंजीनियरिंग संस्थानों में शामिल है।

क्यूएस वर्ल्ड रैंकिंग: नवीनतम क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग डेटा के अनुसार, आइआइटी इंदौर ग्लोबल पटल पर मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व करने वाला अग्रणी संस्थान है, जो इसकी वैश्विक रिसर्च क्वालिटी और एकेडमिक प्रतिष्ठा को दर्शाता है।

मार्क्स और मानक: आइआइटी इंदौर के उच्च प्रदर्शन का मुख्य आधार इसकी टीचर्स-टू-स्टूडेंट रेशियो (एफएसआर), अत्याधुनिक रिसर्च आउटपुट, साइटेशन प्रति फैकल्टी और बेहतर प्लेसमेंट रिकॉर्ड रहे हैं। संस्थान द्वारा अत्याधुनिक लैब और विश्व स्तर की रिसर्च साझेदारियों पर जोर देने के कारण इसके स्कोर लगातार सुधरे हैं।



देश की ओवरऑल तस्वीर



देश के अन्य संस्थानों से आइआइटी पीछे क्यों?

इंटरनेशनल रिसर्च कोलेब्रेशन कम: क्यूएस का इंटरनेशनल रिसर्च नेटवर्क स्कोर ग्लोबल को-ऑथरशिप और रिसर्च पार्टनरशिप पर निर्भर करता है। आइआइटी इंदौर का यह स्कोर सिर्फ 27.3 है, जबकि टॉप भारतीय संस्थानों में यह 42 से 69 तक है।

विदेशी फैकल्टी-इंटरनेशनल स्टूडेंट्स कम: आइआइटी इंदौर में देश के मुकाबले इंटरनेशनल फैकल्टी स्कोर सिर्फ 1.2 और इंटरनेशनल स्टूडेंट्स स्कोर 1.3 है। मप्र की ज्यादातर यूनिवर्सिटीज में यह गैप और भी बड़ा है।

ग्लोबल अकादमिक रिकग्निशन कम: क्यूएस का अकादमिक रेपुटेशन सर्वे दुनियाभर की रिसर्च पर आधारित होता है। पुराने आइआइटी, आइआइएससी और दिल्ली यूनिवर्सिटी की तुलना में मप्र के संस्थानों की ग्लोबल विजिबिलिटी अभी सीमित है।

इंडस्ट्री-एम्प्लॉयर नेटवर्क की कमी: एम्प्लॉयर रेपुटेशन और एम्प्लॉयमेंट आउटकम्स सुधारने के लिए ग्लोबल रिक्रूटर्स, स्ट्रॉन्ग एलुमनी नेटवर्क और हाई-पेइंग इंटरनेशनल प्लेसमेंट की लॉन्ग-टर्म लेगेसी चाहिए। यह नए या रीजनल संस्थानों में धीरे-धीरे डेवलप होती है।

रिसर्च स्केल-फंडिंग की सीमा: क्यूएस में सिर्फ अच्छे पेपर्स नहीं, बल्कि लगातार हाई-इम्पैक्ट रिसर्च, पीएचडी आउटपुट और इंटरनेशनल पब्लिकेशन की क्वांटिटी भी मायने रखती है। छोटे फैकल्टी साइज वाले संस्थानों को यहां स्केल की समस्या आती है।

सस्टेनेबिलिटी-गवर्नेंस का असर: सस्टेनेबिलिटी स्कोर भी रैंकिंग का हिस्सा है। आइआइटी इंदौर का 47.2 स्कोर भारत के औसत 55.6 से कम है, इसलिए कैंपस-लेवल सस्टेनेबिलिटी पॉलिसी को भी स्ट्रॉन्ग करना जरूरी है।

आगे बढ़ने की संभावना: आइआइटी इंदौर के लिए प्लस पॉइंट यह है कि रिसर्च क्वालिटी पहले से नेशनल लेवल की है। अब संस्थान को इंटरनेशनल को-रिसर्च, विदेशी फैकल्टी और स्टूडेंट्स, इंडस्ट्री-बैक्ड पीएचडी प्रोग्राम, ग्लोबल एलुमनी नेटवर्क और सस्टेनेबिलिटी रिपोर्टिंग पर फोकस करना होगा। अगर ये एरियाज सुधरते हैं, तो कुछ सालों में आइआइटी इंदौर का क्यूएस 500 के अंदर स्टेबल पोजिशन आना संभव है।

इंदौर-एमपी के मार्क्स-रैंकिंग: क्यूएस और एनआइआरएफ में ही सिटेशन्स प्रति फैकल्टी और एकेडमिक रेपुटेशन ऐसे मानक हैं, जहां आइआइटी जैसे संस्थान स्कोर करते हैं। आइआइटी इंदौर का रिसर्च स्कोर और इंडस्ट्री आउटलुक इसे अन्य स्थानीय संस्थानों से आगे रखता है। वहीं, राज्य के भीतर टेक्निकल और पारंपरिक उच्च शिक्षा के बीच गहरी खाई है।

प्रदेश के संस्थानों की समस्या

फंडिंग और वित्तीय संसाधन: आइआइटी जैसे केंद्रीय संस्थानों को केंद्र सरकार से भारी बजट और रिसर्च ग्रांट मिलती है, जो स्टेट यूनिवर्सिटीज या प्राइवेट कॉलेजों को उपलब्ध नहीं है।

रिसर्च और पेटेंट संस्कृति गायब: अधिकांश पारंपरिक संस्थानों में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल डिग्री प्रदान करना और थ्योरी आधारित परीक्षाएं कराना रह गया है। यहां फैकल्टी और छात्रों द्वारा वैश्विक स्तर के पेटेंट, उच्च इम्पैक्ट-फैक्टर जर्नल्स में प्रकाशन और इनोवेशन की संस्कृति का अभाव है।

फैकल्टी-स्टूडेंट अनुपात (एफएसआर): राज्य के अधिकांश इंजीनियरिंग और सामान्य कॉलेजों में योग्य और स्थायी प्रोफेसर्स की भारी कमी है। फैकल्टी पर अत्यधिक प्रशासनिक और शैक्षणिक बोझ होने से वे उच्च-स्तरीय रिसर्च पर ध्यान नहीं दे पाते।

इंडस्ट्री से दूरी: आइआइटी इंदौर की तरह अन्य स्थानीय संस्थान कॉर्पोरेट जगत और ग्लोबल इंडस्ट्री के साथ मजबूत लाइव प्रोजेक्ट्स स्थापित नहीं कर पा रहे हैं, जिससे उनकी एम्प्लॉयर रेपुटेशन कमजोर रह जाती है।

एक्सपर्ट व्यू...

कई दिशाओं में काम करना पड़ेगा...

चाहे भारतीय, चाहे एशिया या वर्ल्ड की रैंकिंग हो, उसके पैरामीटर को ध्यान में रखकर तैयारी करनी होगी। अगर अवेयरनेस हो तो कई और इंस्टिट्यूट ऐसी रैंकिंग्स में अपना स्थान बना सकते हैं। यह बात सही है कि फंडिंग की हमें बड़ी कमी है और साथ में रिसर्च, इंफ्रास्ट्रक्चर और दूसरी चीजों की भी कमी है। देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी का उदाहरण लें तो यहां पर हमें ब्लॉक ग्रैंड 9 करोड़ रुपए के करीब मिलती है, जबकि बजट साढ़े तीन सौ करोड़ का है। यही स्थिति बाकी इंस्टिट्यूट के साथ भी है।

डॉ. सुमन कटियाल, प्रोफेसर व पूर्व डीसीडीसी, देवी अहिल्या विवि

डीएवीवी इंदौर काफी पीछे

देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी एनआइआरएफ रैंकिंग में यूनिवर्सिटी कैटेगरी में काफी पीछे के बैंड (151-200) में संघर्ष कर रहा है। देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी या राज्य की अन्य यूनिवर्सिटीज के पिछड़ने का मुख्य कारण उनका अत्यधिक स्टूडेंट भार, बुनियादी ढांचे का आधुनिकीकरण न होना और रिसर्च ग्रांट की कमी है। हालांकि यूनिवर्सिटी की ग्रेजुएशन आउटकम्स और स्थानीय रोजगार के क्षेत्र में स्थिति ठीक है, लेकिन वैश्विक या नेशनल टॉप रैंकिंग के लिए जरूरी कड़े मापदंड जैसे इंटरनेशनल फैकल्टी, फॉरेन स्टूडेंट और उच्च स्तरीय साइटेशन पर यह खरा नहीं उतर पा रहा है।